सामाजिक विज्ञान

(भूगोल)

अध्याय-1: संसाधन

SHIVOM CLASSES 8696608541

संसाधन

एक ऐसा स्रोत है जिसका उपयोग मनुष्य अपने इच्छाओं की पूर्ति के लिए के लिए करता है। हमारे पर्यावरण में उपलब्ध हर वह वस्तु संसाधन कहलाती है जिसका इस्तेमाल हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कर सकते हैं।

संसाधन की परिभाषा

हमारे पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु जो हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रयुक्त की जा सकती है और जिसकों बनाने के लिए प्रौद्योगिकी उपलब्ध है, जो आर्थिक रूप से संभाव्य और सांस्कृतिक रूप से मान्य है, एक 'संसाधन' है।

स्मिथ एवं फिलिप्स के अनुसार : "भौतिक रूप से संसाधन वातावरण की वे प्रक्रियायें हैं जो मानव के उपयोग में आती हैं"

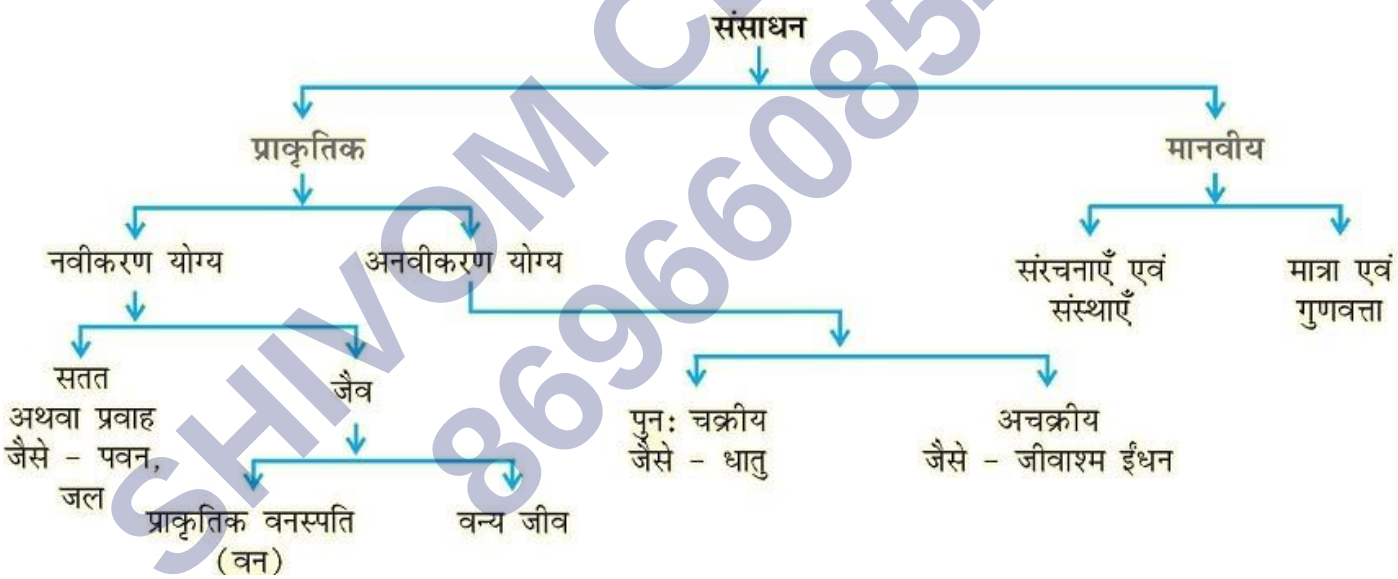

उपयोगी

प्राकृतिक संसधान , मानवीय संसधान , मानव निर्मित संसधान ये सभी वस्तुओं का उपयोग मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। प्रयोज्यता :- एक वस्तु अथवा पदार्थ की उपयोगिता अथवा प्रयोज्यता उसे एक संसधान बनाती है। समय और प्रौद्योगिकी दो महत्वपूर्ण कारक हैं जो पदर्थों को संसधान में परिवर्तित कर सकते हैं।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

प्रयोज्यता :- एक वस्तु अथवा पदार्थ की उपयोगिता अथवा प्रयोज्यता उसे एक संसधान बनाती है।

मूल्य :- कुछ संसधानो का आर्थिक मूल्य होता है। जैसे – धातुओं का आर्थिक मूल्य होता है।-

समय और प्रौद्योगिकी दो महत्वपूर्ण कारक हैं जो पदर्थों को संसधान में परिवर्तित कर सकते हैं। आग की खोज से खाना पकाने और पहिए के आविष्कार बसे अन्ततः परिवहन की नवीनतम विधियों का विकास हुआ और जलविद्युत बनाने की प्रौद्योगिकी ने तेजी से बहते जल से ऊर्जा उत्पन्न करके, उसे एक महत्वपूर्ण संसधान बना दिया है।

पेटेन्ट :- इसका तात्पर्य किसी विचार अथवा आविष्कार एकमात्र अधिकार से है।

पेटेण्ट या एकस्व किसी देश द्वारा किसी अन्वेषणकर्ता को या उसके द्वारा नामित व्यक्ति को उसके अनुसन्धान को सार्वजनिक करने के बदले दिए जाने वाले अनन्य अधिकारों के समूह को कहते है। यह एक निश्चित अवधि के लिये दिया जाता है।

प्रौद्योगिकी :- प्रौद्योगिकी, व्यावहारिक और औद्योगिक कलाओं और प्रयुक्त विज्ञानों से संबंधित अध्ययन या विज्ञान का समूह है। कई लोग तकनीकी और अभियान्त्रिकी शब्द एक दूसरे के लिये प्रयुक्त करते हैं। जो लोग प्रौद्योगिकी को व्यवसाय रूप में अपनाते है उन्हे अभियन्ता कहा जाता है। आदिकाल से मानव तकनीक का प्रयोग करता आ रहा है। आधुनिक सभ्यता के विकास में तकनीकी का बहुत बड़ा योगदान है। जो समाज या राष्ट्र तकनीकी रूप से सक्षम हैं वे सामरिक रूप से भी सबल होते हैं और देर-सबेर आर्थिक रूप से भी सबल बन जाते हैं।

संसधान के प्रकार

- **प्राकृतिक संसधान :-** जो संसधान प्रकृति से प्राप्त होते हैं और अधिक संशोधन के बिना उपयोग में लाए जाते हैं, प्राकृतिक संसधान कहलाते हैं। वायु, जिसमें हम साँस लेते हैं, हमारी नदियों और झीलों का जल, मृदा और खनिज, सभी प्राकृतिक संसधान हैं। विभिन्न समूहों में प्राकृतिक संसाधनों का वर्गीकरण उनके विकास एवं प्रयोग के स्तर, उदगम, भंडार एवं वितरण के अनुसार किया जाता है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- **वास्तविक संसाधन :-** वे संसाधन होते हैं जिनकी मात्रा ज्ञात होती है। इन संसाधनों का इस समय उपयोग किया जा रहा है। महाराष्ट्र में दक्कन पठार की काली मिट्टी के भरपूर निक्षेप सभी वास्तविक संसाधन हैं।
- **संभाव्य संसाधन :-** वे संसधान हैं जिनकी सम्पूर्ण मात्रा ज्ञात नहीं है लेकिन इसका उपयोग भविष्य में किया जा सकता है। लद्दाख में पाया गया यूरेनियम संभाव्य संसधान का एक उदाहरण है जिसका उपयोग भविष्य में किया जा सकता है।

संसधान के वितरण

सर्वव्यापक :- जो संसधान सभी जगह जाते हैं , जैसे – वायु जिसमें हम साँस लेते हैं।

स्थानिक :- वे संसाधन जो कुछ निश्चित स्थानों पर ही पाए जाते हैं । जैसे ताँबा और लौह-अयस्क।

उत्पत्ति के आधार पर संसाधन

1. जैव संसधान सजीव वस्तुएँ होते है जैसे – पौधे और जंतु आदि।
2. अजैव संसाधन निर्जीव वस्तुएँ जैसे – मृदा, चट्टानें आदि।

प्राकृतिक संसाधन का विस्तृत रूप

- **नवीकरणीय संसाधन :-** वे संसाधन हैं जो शीघ्रता से नवीकृत अथवा पुनः पूरित हो जाते हैं।इनमें से कुछ असीमित है और उन पर मानवीय क्रियाओं का प्रभाव नहीं होता, जैसे – सौर और पवन ऊर्जा नवीकरणीय संसधानों, जैसे – जल, मृदा और वन का लापरवाही से किया गया उपयोग उनके भंडार को प्रभावित कर सकता है।
- **अनवीकरणीय संसाधन :-** वे संसाधन है जिनक भंडार सीमित, है। ये भंडार एक बार समाप्त होने के बाद उनके नवीकृत अथवा पुनः पूरित होने में हजारों वर्ष लग सकते हैं।अनवीकरणीय संसाधन, जैसे कोयला, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस जो मानव जीवन की अवधि से बहुत अधिक है।

संसधान के वितरण

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- **सर्वव्यापक :-** जो संसधान सभी जगह जाते हैं, जैसे – वायु जिसमें हम साँस लेते हैं।
- **स्थानिक :-** वे संसाधन जो कुछ निश्चित स्थानों पर ही पाए जाते हैं। जैसे ताँबा और लौह - अयस्क।

प्राकृतिक संसाधनों का वितरण भूभाग, जलवायु, ऊँचाई जैसे अनेक भौतिक कारकों पर निर्भर करता है।

मानव निर्मित

कभी-कभी प्राकृतिक पदार्थ तब संसाधन बन जाते हैं जब उनका मूल रूप बदल दिया जाता है। लौह-अयस्क उस समय तक संसाधन नही था जब तक मानव ने उससे लोहा बनाना नही सीखा था। मानव प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग पुल, सड़क, मशीन और वाहन बंनाने में करते है जो मानव निर्मित संसाधन के नाम से जाने जाते हैं। प्रौद्योगिकी भी एक मानव निर्मित संसाधन है।

मानव संसाधन :- लोग ओर अधिक संसाधन बनाने के लिए प्रकृति का सबसे अच्छा उपयोग तभी कर सकते हैं जब उनके पास ऐसा करने का ज्ञान, कौशल तथा प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो।

मानव संसाधन किसी भी संगठन की अत्यधिक महत्वपूर्ण संपत्ति होती है। किसी भी संगठन की क्षमता एवं प्रभाविकता उसके मानव संसाधन के प्रभावी उपयोग पर अधिक निर्भर करता है। इस संसाधन की महता को ध्यान मे रखते हुए, यह अत्यावश्यक है कि इसके विकास के लिए पर्याप्त ध्यान देना होगा ।

मानव संसाधन विकास :- अधिक संसाधनों के निर्माण में समर्थ होने के लिए लोगों की कौशल में सुधार करना।

संसाधन संरक्षण :- संसाधनों का सतर्कता पूर्वक उपयोग करना और उन्हें नवीकरण के लिए समय देना ।

सततपोषणीय विकास :- संसाधनों का उपयोग करने की आवश्यकता और भविष्य के लिए उनके संरक्षण में संतुलन बनाए रखना सततपोषणीय विकास कहलाता है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 5)

प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

1. पृथ्वी पर संसाधन असमान रूप से क्यों वितरित हैं ?
2. संसाधन संरक्षण क्या है ?
3. मानव संसाधन महत्त्वपूर्ण क्यों हैं ?
4. सततपोषणीय विकास क्या है ?

उत्तर –

1. पृथ्वी पर संसाधन प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। प्राकृतिक संसाधनों का वितरण भूभाग, जलवायु, ऊँचाई जैसे अनेक भौतिक कारकों पर निर्भर करता है। पृथ्वी पर इन कारकों में अनेक विभिन्नता पाई जाती है और इन्हीं विभिन्नताओं के कारण पृथ्वी पर संसाधन असमान रूप से वितरित है।
2. संसाधनों का सतर्कतापूर्वक उपयोग करना और उन्हें नवीकरण के लिए समय देना, संसाधन संरक्षण कहलाता है। संसाधनों के संरक्षण के अनेक तरीके है। प्रत्येक व्यक्ति उपभोग को कम करके वस्तुओं के पुन: चक्रण और पुन: उपयोग द्वारा योगदान दे सकता है, अर्थात संसाधन संरक्षण कर सकता है।
3. मानव संसाधन से तात्पर्य लोगों की संख्या और योग्यता (मानसिक तथा शारीरिक) से है। मानव संसाधन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मनुष्य की कुशलताएं ही संसाधनों को प्रयोग में लाती है। लोग और अधिक संसाधन बनाने के लिए प्रकृति का सबसे अच्छा उपयोग तभी कर सकते है जब उनके पास ज्ञान, कौशल और प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो, और इसमे मनुष्य ही एक विशिष्ट प्रकार का संसाधन है। मनुष्य ही संसाधनों का प्रयोग करना अच्छे से जानता है। शिक्षा और स्वास्थ्य का अच्छे से उपयोग करके मानव ने संसाधन को अत्यधिक महत्वपूर्ण बनाया है।
4. संसाधनों का उपयोग करने की आवश्यकता और भविष्य के लिए उनके संरक्षण में संतुलन बनाए रखना, सततपोषणीय विकास कहलाता है। इससे तात्पर्य यह है कि संसाधनों का

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

सावधानीपूर्वक उपयोग ताकि न केवल वर्तमान पीढ़ी की अपितु भावी पीढ़ियों की आवश्यकताएं भी पूरी होती रहें।

प्रश्न 2 सही उत्तर पर निशान लगाइए :-

1. निम्नलिखित में से कौन संसाधन को निर्धारित नहीं करता ?
   (क) उपयोगिता
   (ख) मूल्य
   (ग) मात्रा
2. निम्नलिखत में से कौन सा मानव निर्मित संसाधन है ?
   (क) कैंसर उपचार की औषधियाँ
   (ख) झरने का जल
   (ग) उष्णकटिबंधीय वन
3. कथन पूरा कीजिए :-
   अनवीकरणीय संसाधन _____ होते है।
   (क) सिमित भंडार वाले
   (ख) मनुष्यों द्वारा निर्मित
   (ग) निर्जीव वस्तुओं से व्युत्पन्न

उत्तर –

1. (ग) मात्रा
2. (क) कैंसर उपचार की औषधियाँ
3. (क) जीव – जंतुओं से व्युत्पन्न

प्रश्न 3 क्रियाकलाप –

“ रहिमन पानी राखिए बिनु पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरे मोती, मानुस, चून ...”

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

ये पंक्तियाँ अकबर के दरबार के नौ रत्नों में से एक, कवि अब्दुर रहीम खानखाना द्वारा लिखी गई थीं। कवि किस प्रकार के संसाधन की ओर संकेत कर रहा है ? इस संसाधन के समाप्त हो जाने पर क्या होगा ? इसे 100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर – कवि इसमें जल के संसाधन की ओर संकेत कर रहा है। कवि इस दोहे में कहता है कि जिस तरह से पानी के बिना आटे का और चमक के बिना मोती का कोई महत्व नहीं रह जाता है, उसी तरह मनुष्य भी बिना विनम्रता के आभाहीन हो जाता है और उसके मूल्यों का पतन हो जाता है। कवि बताना चाहता हैं कि यदि जल हमारी पृथ्वी से समाप्त हो गया तो हमारी दशा कैसी हो सकती है। जल की एक-एक बून्द मूल्यवान है। हम जल के बिना जीवित नहीं रह सकते। जल खेती – बाड़ी, पीने के लिए, खाना बनाने के लिए, नहाने के लिए, वाहन तथा उद्योग में भी उपयोग में लाया जाता है। जल के बिना एक दिन भी हम नहीं निकाल सकते है। जल हमारे रोजमर्रा के काम से जुड़ा होता है। जल के बिना जीवन संभव नहीं है। जल के बिना खेती होना नामुमकिन है और बिना खेती हमारे लिए अनाज पैदा होना मुश्किल है। जल के बिना ना वाहन चलेंगे ना सफाई होगी। बिना सफाई बीमारी फ़ैल जाएगी। सार्थक शब्दों में जल ही जीवन है, जल नहीं तो हम भी नहीं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)